Indian Research Journal
Vol -3 , ISSUE – 5, June - 2013
ISSN No - 2230 - 7850
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

कवि नागार्जुन के काव्य और व्यंग

वासुदेव शेट्टी
सह प्राध्यापक, सरकारी महिला कोलेज, मंड्या.

सार:

कबीर और निराला के बाद नागार्जन का नाम हिन्दी काव्य में व्यंग्यकार के रूप में आता है। उनका कटाक्ष कटु और तीक्ष्ण है और साथ ही उनकी तीव्र दृष्टि से कोई भी वर्ग अछूता नहीं है। वह वास्तविक जीवन का चित्रण करने वाले एक लोकतांत्रिक कवि हैं। अपने मार्मिक व्यंग्य काव्य के कारण उन्हें प्रगतिशील काव्य का सबसे सफल व्यंग्यकार कहा जाता है। वास्तव में नागार्जुन का व्यंग्य बहुत स्पष्ट और खुला है और उनके व्यंग्य में कोई पर्दा या दोष नहीं है, इसमें तीक्ष्ण हास्य, करुणा और सुडौल कथन का प्रभावी रूप है। उनके कैरिकेचर एक सच्चे लोकतंत्रवादी और पानी-प्रेमी कवि के कैरिकेचर हैं, यह उनकी व्यंग्य कविताओं को पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है।

परिचय:

नागार्जन के व्यंग्य कविताओं में कबीर की वाणी, भारतेन्दु की करुणा और निराला के प्रखर वक्ता का अनूठा मिश्रण है। उनके रूखे स्वभाव और खानाबदोश स्वभाव ने उन्हें लापरवाह और निडर बना दिया था। उनमें देश की समस्याओं से निपटने की भी अद्भुत शक्ति थी। आम आदमी से लेकर बड़े नेता तक उनके तीखे व्यंग्यात्मक तीरों से नहीं बच सके। नागार्जुन की कलम सभी विसंगतियों पर सटीक प्रहार करती है। उनमें समकालीन क्रोध, भ्रम, मोहभंग, विद्रोह और संघर्ष जैसी स्थितियाँ बार-बार प्रकट होती हैं। वे समसामयिक विसंगतियों, जटिलताओं, अंतर्विरोधों और व्यापक विकृतियों के बीच आम लोगों की पीड़ा और पीड़ा को महसूस करते हैं। उनकी कई कविताएँ अपने तीखे व्यंग्य के लिए आज ऐतिहासिक महत्व रखती हैं।

अपनी कविताओं में उन्होंने भ्रष्ट शासकों, साम्राज्यवादी राजनेताओं, पाखंडी और झूठे कार्यकर्ताओं तथा कर्तव्य से भागने वाले लोगों पर कटु व्यंग्य किया है। राजनीति का कोई ऐसा पहलू नहीं जो उनकी तीक्ष्ण –ष्टि से बचा हो। उन्होंने वर्तमान युग की भ्रष्ट राजनीति और राजनेताओं पर करारा व्यंग्य किया है। राजनीतिक भ्रष्टचार और नेताओं पर जितना व्यंग्य नागार्जुन ने किया है, उतना किस अन्य ने नही किया। भ्रष्ट राजनीति और राजनेताओं को लेकर नागार्जुन ने कई सारी व्यंग्यपूर्ण कविताओं की रचना की है। उनकी प्रारंभीक कविताओं में नेहरू युग, गाँधी युग की पहचान मिलती है तो इधर की कविताओं में इंदिरा युग, जनता शासन काल, लोकतांत्रिक उथल-पुथल, राजनीतिक हिंसा भ्रष्टचार, अंध सत्तावाद तथा राजनीति की जनविरोधी नीतियों का हाल- चाल अंकित है। वर्तमान युग में राजनीति का स्वरूप इतना गंदा हो चुका है कि एक दूसरे के कटटर शत्रु कब एक -दुसरे के मित्र बन जाए कह नहीं सकते। जयप्रकाश आन्दोलन में नागार्जुन ने बढ-चढकर भाग लिया था उसके विफल होने पर उनकी वाणी का स्वर और भी धारदार हो गया। तुमने कहा था पुरानी जूतियों का कोरस संग्रहों की कविताओं में राजनीतिक विसंगतियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य देखते ही बनता है-

ओं दलों में एक दल अपना दल, ओम
ओं अंगीकरण शुध्दिकरण, राष्ट्रीयकरण
ओं मुष्टीकरण, तुष्टिकरण, पुष्टिकरण

ओं एजराज, आक्षेप, अनुशासन
ओं गददी पर आजीवन वज्रासन
ओं ट्रिब्यूनल ओं आश्वासन।

नागार्जुन अपने प्रखर व्यंग्य से तथ्थ्यों को उभारते है। पण्डित नेहरू के राजत्व काल में इंग्लैड की रानी एलिजाबेथ भारतयात्रा पर आयी थी। उनकें स्वागत को तैयारी में व्यस्त कॉग्रेसियों पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने लिखा था-

आओं रानी, हम ढोएंगे पालकी
यही हुई है राय जवाहरलाल की।

स्वार्थी और अवसरवादी नेताओं पर कवि द्वारा लिखी गई व्यंग्यात्मक कविताओं ने उस समय की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। उन्होंने कांग्रेस नेताओं की खुलकर खिल्ली उड़ाई है। उनके व्यंग्य से पंडित नेहरू भी नहीं बचे, उन पर निशाना साधते हुए कवि कहते हैं कि आज देश का बड़ा से बड़ा नेता भी एक विदेशी ताकत के सामने हाथ जोड़कर खड़ा है। कवि कहते हैं-

वतन बेचकर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं
बेशर्मी की हद है, फिर भी बातें बडी मानते है
अंग्रेजी, अमेरिकी जोंको की जमात में है शामिल
फिर भी बापू को समाधि पर झुक झुक फूल चढाते है।

स्वातंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू किस प्रकार से पूंजीवादी देशों के प्रभाव प्रधानमंत्री नेहरू किस प्रकार से पूँजीवादी देशों के प्रभाव में आ रहे इसका चित्रण इस कविता में कवि ने किया है। कवि को यह स्वीकार नहीं कि स्वाधीन भारत के प्रधानमंत्री विश्व की किसी सत्ता के सम्मुख हाथ फैलाकर खडे रहें। व्यंग्य की जितनी मार्मिकता तथा तीखापन नागार्जुन की कविताओं में है उतना अन्य किसी प्रगतिवादी कवि में नहीं है। उनकी तेज निगाहें प्रायमरी स्कूल के शिक्षक को भी नहीं बक्शतीं जो मार-पीटकर ;'आदम' के सांचेगढ रहा है। प्रायमरी शिक्षक को स्थिति को बिना किसी लागलपेट के उजागर करनेवाली 'मास्टर' कविता का व्यंग्य है -

घुन खाए शहतीरों पर की
बारहवडी विधाता बांचे
फटी भीत है, छत चूती है
आलों पर बिस्तुइया नाचे
लगा-लगा बेबस बच्चों पर
मिनट-मिनट पर पांच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर
गढता है आदम के सांचे।

व्यंग्य नागार्जुन के साहित्य की सबसे बड़ी ताकत है। कबीर की तरह यहाँ कैरिकेचर जन्मजात संस्कार का एक रूप है। उनमें गजब का टैलेंट है, उससे कहीं ज्यादा उनमें हिम्मत है। किसी भी राजनीतिक प्रसंग पर आसानी से पद्य रचना करने वाले नागार्जुन दो बातों में पारंगत लगते हैं। नागार्जुन स्थिति से समझौता करना नहीं जानते, वे शासकों की हथेलियों को चाटना पसंद नहीं करते, वे इन पाखंडियों और स्वार्थी नेताओं को अत्यंत विस्तार से

बेनकाब करने के लिए तैयार हैं। कांग्रेस की पूंजीवादी, पाखंडी राजनीति का पर्दाफाश करते हुए उनके कैरिकेचर में सत्ता और धार दोनों ही सबसे मजबूत हैं-

इंदूजी इंदूजी, क्या हुआ आपको? भूल गई बाप को?

नागार्जुन ने बहुत सटीक चित्रण किया है कि कैसे देश के कांग्रेस नेता झूठ बोलकर देश की भोली-भाली जनता को गुमराह कर रहे थे। नागार्जुन के व्यंग्य इस देश के आम आदमी को प्रभावित करते हैं क्योंकि उनके व्यंग्य काल्पनिक नहीं सपनों का जाल होते थे। यह जीवन की सच्चाई है। कवि ने अपनी आंखों से जो देखा, उसे कविता में व्यक्त किया है। कांग्रेसी लोगों पर अपने तिरस्कारपूर्ण व्यंग्य पर निशाना साधते हुए कवि कहते हैं-

कॉग्रेस जन तो लेणे कहिए, जे पीर अपनी जाणे रे
पर दुख में अपना सुख साधें, दया भाव न आणे रे
तीन भुवन मा ठगे सभी को, शरम ना राखे केनी रे
टोपी - कुर्ता- धोती खददर, धन धन जननी तेनी रे।

जीवन के तथ्यों से भरा ऐसा व्यंग्य नागार्जुन के अतिरिक्त किसी अन्य कवि के काव्य में नहीं मिलता। देश के नेता इस देश की भोली जनता को झूठे सपने दिखाकर त्याग और बलिदान की भाषा का उपदेश देते हैं। अत: ये नेता स्वयं स्वार्थ और क्षुद्रता से भरे हुए हैं। गांधीजी के नाम पर वोट बटोरना कांग्रेसियों की मजबूरी है। क्योंकि इन नेताओं के पास ऐसा कुछ भी नहीं बचा है जिससे ये लोगों से वोट मांग सकें. इन नेताओं ने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे लोग उनकी या उनके काम की सराहना करें। नेताओं का चरित्र ऐसा नहीं रहा है कि लोग उनकी इज्जत करें। इन नेताओं ने अपनी सारी शर्म और शर्मिंदगी छोड़ दी है। नेताओं की बेशर्मी का चित्रण करते हुए कवि ने कहा है-

गाँधीजी का नाम बेचकर बतलाओ कब तक खाओगे?
यम को भी दुर्गध लगेगी, नकर भला कैसे जाओगे?
दिल-दिमाग है रहेन, शासन का फिर क्यों कर काम चलेगा?
पब्लिक नहीं उठेगी तो, अब कौन तुम्हारा काम मलेगा?।

आजादी के बाद गांधीजी के आदर्शों- की धाज्जियाँ उडाने में राजनेताओ ने कोई कसर बाकी नहीं रखी-उनके तीनें बंदर पर तीक्ष्ण वार करती ये पंक्तियॉ-

प्रेम पगे है, शहद सने है तीनों बंदर बापू के
गुरूओं के भी गुरू है तीनों बंदर बापू के
सौवी बरसी रहे है तीनों बंदर बापू के
बापू को ही बना रहे है तीनों बंदर बापू के।

ये पंक्तियाँ गांधीजी के मूल्यों के पतन को प्रकट करती हैं। वे चुटकुले या हास्य-व्यंग्य लिखने में माहिर हैं और कई पाठक उनके इस गुण के प्रशंसक हैं। १९७०-७१ के आसपास, जब देश में प्रगतिशील ताकतों ने इंदिरा गांधी को समाजवाद के मसीहा के रूप में देखा, तो उनकी पैनी नजर ने उनके अंदर निहित फासीवादी स्वभाव को उजागर कर दिया। २६ जनवरी और १५ अगस्त जैसी ऐतिहासिक तारीखों पर भी नागार्जुन के विश्वास खोने का एकमात्र कारण सामंतवाद के रूप में मौजूद लोकतंत्र के नाम पर शोषक शक्ति का बदला हुआ रूप था। नागार्जुन की आवाज उन गिने-चुने कवियों में सबसे बुलंद थी, जिन्होंने देश की घोषणा के समय और उसके बाद बहादुरी से

आपातकाल का विरोध किया था। उस दौर में जितने कड़वे व्यंग्य कवियों ने लिखे, उतने ही अन्य कवियों ने भी तानाशाही के खिलाफ कटु व्यंग्य कविताएं लिखीं। यह इस कवि का साहस है जिसने स्पष्ट रूप से कहा है-

इंदूजी इंदूजी क्या हुआ आपको
सत्ता के मद में भूल गई बाप को।

इस कविता में किसी व्यक्ति का विरोध न होकर तानाशाही प्रवृत्ति का विरोध था। जिसे इस जनवादी कवि ने कविता के माध्यम से जनता तक पहुँचाया। समकालीन कविता में जनवादी कविता के माध्यम से उन्होंने जिस पतनशील राजनीतिक स्थितियों का चित्रण किया वह यथार्थ को ही व्यक्त करने वाली है। इस समय नागार्जुन की एक और कविता 'कालीमाई' बडी चर्चित रही। इस कविता में नागार्जुन ने बिल्कुल स्पष्ट रूप से इंदिरा गांधी पर व्यंग्य किया है-

मुंडमाला के लिए गरीबों पर निगाह है
धनपतियों के लिए दया की खुली राह है
कितना खुन पिया है जाती नहीं खुमारी
सुर्ख और लंबी है मैया जीभ तुम्हारी।

देश में बढते हुए तानाशाही के रूप को देखकर यह कवि भीतर ही भीतर व्याकुल होता है। पर व्याकुल होकर खामोशी से सबकुछ सह लेना नागार्जुन की फितरत नहीं है। देश की राजनीतिक व्यवस्था और सत्ता के केन्द्रित हो जाने के परिणाम को इस कवि ने पहले ही भांप लिया था। नाहक ही की डर गयी हूजूर कविता में वे अधिकारीयों के जीवन पर व्यंग्य करते है। जनता की सुख-सुविधा हेतु जितनी योजनाएं बनती है वह सब मात्र शासकीय कार्यवाहियाँ होती है जो पृष्ठों में अंकित रहती है। विकास की योजनाएं पृष्ठों पर जन्म लेकर मृतप्राय हो जाती है और भूख से कुचले ग्रामवासी विषमता में अपनी माटी छोडकर शहरों की और उन्मुख होते है। यथार्थ से परे समाचार पत्र अपने कार्या का सम्पादन करते है। कृषी की अभूतपूर्व उन्नति प्रसारित करते है और इस प्रकार देश की कृषि का विकास असेम्बली की छत पर होता है-

कागज पर खेती होती कमल हुई हरफार
छोड रहे हैं गाँव खेत मजदूरों के परिवार।
कृषि विकास की खबरे प्रतिदिन छाप रहे अखबार
असेम्बली की छत पर फसले उगा रही सरकार।

उपसंहार -

अपनी व्यंग्यपुर्ण कविताओं में नागार्जुन हमेशा सामाजिक परिवर्तन की बात कही है और सामाजिक परिवर्तन में इस देश के मजदूर, किसान और श्रमिकों के संघटन को सबसे अधिक महत्व दिया है। उनके लिए जनता का हित ही सवौपरि है। उनके कटु से कटु व्यंग्य में राजनीति के महत्व की पुरी और गंभीर समझ है।सामाजिक असमानता, धार्मिक रूढियाँ, फैशन-परस्ती, राजनितिक भ्रष्टचार से सब कुछ नागार्जुन की व्यंग्य की नोक पर आये है। नागार्जुन ने किसी को माफ नहीं किया। उनके व्यंग्य का लक्ष्य व्यक्ति-विशेष न होकर तत्कालीन स्थितियाँ है। उनके व्यंग्य में कई स्तर है, कई तेवर है। कही उसमें उपसहासवृत्ति प्रमुखता पाती है, कहीं प्रहारात्मक तेवर प्रबल हो जाता है तो कहीं उलाहना या फटकार नजर हाती है और कहीं उसमें करूणा का स्वर घुल-मिल जाता है। जनवादी काव्यधारा के इस प्रतिनिधी ने जनवादी विचारधारा को ही आत्मसात कर अपनी व्यंग्यपुर्ण शैली में जो कुछ कहा है वह समकालीन कविता का सर्वोत्कृष्ट व्यंग्य सिध्द हुआ है यही कारण है कि उनकी कविताएँ अपने समय के यथार्थ का सजीव चित्रण करती है। वे हिंदी व्यंग्य काव्य में एकमात्र सबल सशक्त

प्रतिनिधि है, व्यंग्य के विभिन्न स्तरों से उनकी कविता सजी हुई है। आधुनिक हिंदी में श्रेष्ठ व्यंग्य की परंपरा स्थापित करनेवाले जनसाधारण के सच्चे हिसैषी नागार्जुन का काव्य हिंदी जगत की अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ:

१. नागार्जुन- मंत्र-कविता- प्रतिनिधि कविताएं संपा.-नामवर सिंह - पृ – १११
२. नागार्जुन- आओ रानी, हम ढोएंगे पालकी, जनकवि- संपा. विजयबहादूर सिंह - पृ – १२२
३. नागार्जुन- इस गुब्बारे की छाया में - पृ – ६२
४. नागार्जुन- मास्टर, प्रतिनिधिक कविताएं संपा. नामवरसिंह - पृ – ११०
५. डॉ. रामस्वरूप चतुवैदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास
६. नागार्जुन- इस गुब्बारे की छाया में - पृ – ६४
७. नागार्जुन- हजार हजार बॉहों वाली - पृ – ८४
८. नागार्जुन - तीनों बंदर बापु के, प्रतिनिधि कविताएं संपा. नामवरसिंह पृ-११०
९. नागार्जुन - चुनी हुई कविताएं पृ-१४६
१०.नागार्जुन - चुनी हुई कविताएं पृ-१४६
११.नागार्जुन- हजार हजार बॉहों वाली - पृ - १३३